ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

शिक्षा द्वारा संवादिता-समानता : प्रात: काल या स्वप्न ?

KEY WORDS:

Dr. Neeta S. Tripathi

Assistant Professor College Address: S.V. College of Education S.V. Campus, Near Railway Station, Kadi, Dist: Mehsana (North Gujarat)

ABSTRACT

विषय उद्‌बोधन से कुछ गृहीत चर्चा -विचारणा के तय किए हुए हे। प्रास्ताविकमे स्वातंत्र्य पूर्व से स्वातंत्र्योत्तर तक विहंगावलोकन करके २०वी सदी की शिक्षा व्यवस्था की गतिविधि के चयन से कुछ विवादित समस्याओं से ध्यान केन्द्रित किया गया हे ।

२१ मी सदी के लिए शिक्षा द्वारा संवादिता का प्रातः कालमे कुछ स्वप्न देख रही हूँ । शालेय शिक्षाविधि की अपेक्षा बताकर संवादीता स्वरुपकी ओर दृष्टिपात करके SUB THEME ३ एवं ७ के समन्वय से विचारणा की गई हे । युवा नेतृत्व के लिए कार्यक्रम अभ्यासक्रम की अपेक्षा का निर्देश किया गया हे । युवा नेतृत्व के लिए चारित्र्य, बुध्दिमता, भावनात्मक बुध्दिमता से हृदयसंपत्ति का विनियोग, चारित्र्य प्राप्ति की अपेक्षाकृत युवावर्ग की व्यवसायी चारित्र्य, प्रेरणा, ज्ञान तजज्ञता, साहसिकता से व्यापार वृद्धि के लिए तकनीकी तजज्ञता एवं तकनीकी नीतिमता की अपेक्षा का लक्ष्य करके स्पर्धात्मक क्षेत्रोमें सहकार, संवादिता और प्रगतिकारक व्यक्ति नागरिक की प्रभावी प्रतिभा सिध्ध करे - ये स्वप्न हे । शिक्षक स्वभाव से में निराशावादी नहीं हूँ लेकिन चिन्तित जरुर हूँ क्योंकि सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था में जो कुछ नकारात्मकता फेल रही हे । फिर भी न्यू इंडिया की नई सुबह तो देखनी हे । वो सुबह कभी तो आएगी ।

अस्तु ।

१. विषय के उद्‌बोधन से चर्चा विचारणा के लिए निम्नांकित गृहित (Assumptions) तय किऐ है ।

- शिक्षा व्यवस्था समाज व्यवस्था की पेटा व्यवस्था है ।
- शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप खुला (Open) व्यवस्थारूप है जो समाज, राष्ट्र, अंतर्राष्ट्र एवं वैश्विक व्यवस्था प्रभावो से अभिभावक होती है ।
- सामाजिक विकास, बदलाव एवं परिवर्तन के लिए शिक्षा व्यवस्थाओ से अपेक्षा कि जाती है ।
- सामाजिक मांग (Needs) और शिक्षा द्वारा पूर्ति का प्रमाण ३:१ होना असंभव है, फिर भी शिक्षा नीति में बदलाव के आधार पर शिक्षा व्यवस्था फेरफार (Intervention), नवीनीकरण (Innovations) से अपेक्षापूर्ति को समाधान प्राप्त हो सकता हे ।

१.१ चर्चा विचारणा की मर्यादाएँ :

- शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत कौटूबिक सदस्यों के साथ सहविचारणा
- शिक्षण-प्रशिक्षण अध्यापक के रूप में विचारशीलता
- शालेय शिक्षा विधि की अपूर्तियां एवं HIGHER EDUCATION के संदर्भ में व्यावसायिक व्यक्तित्व का अनुमानीय स्वरुप
- प्रेरणादायी साहित्य का पठन

२ प्रास्ताविक :

शिक्षा व्यवस्थालक्षी एतिहासिक विहंगावलोकन -

स्वातंत्र्य पूर्व विदेशी शिक्षा व्यवस्था का स्वीकार किया गया जो राजनैतिक माँग पूर्ति के कारण अमल में रहा । स्वराज्य प्राप्ति अभियान से स्थानिक शिक्षा व्यवस्था का अभियान भी शुरू हुआ । महात्मा गांधीजी से HEART,HEAD AND HAND लक्षित द्रष्टिकोण प्रचार में आया । ग्रामोधार लक्ष्य से बुनियादी (BASIC) शिक्षा प्रणाली एवं तालीमी शिक्षा का माहोल बना। जो शालेय शिक्षा द्वारा सामाजिक मांग पूर्ति से हल स्वरुप अपनाया गया ।

२.१ स्वातंत्र्योतर काल से राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अपेक्षाएँ बढती रही । जिसकी गतिविधि के लिए समितियाँ , कमिटियाँ ,सर्वेक्षण के सुक्ष्म विचारणा के आधार से प्राथमिक कक्षा से उच्च शिक्षा कक्षा तक संस्थाएँ ,प्रवेशार्थी संस्था,शिक्षा - शिक्षक तालीम का व्याप बढ़ता रहा । राष्ट्रीय शिक्षण नीति निश्चित कमीशन के सर्वे रिपोर्ट के आधारित - १९६८, १९८६,१९९२ शिक्षा स्तर लक्षित अभियान अपनाएँ गए । सर्वशिक्षा अभियान, कन्या शिक्षण, MLL प्रोजेक्ट, शिक्षा का सर्वांगीकरण, वैश्वीकरण, Education for all, women education, vocational education, विकालांगो का शिक्षण और value education आदि शिक्षा व्यवस्था सुविधा सबंधी राष्ट्रीय मर्यादा की पूर्ति के लिए privatization अपनाया गया। २०वी` सदी के अंत तक पूर्तियां, उपलब्धियाँ, स्वीकार, संतोष और अपूर्तियों के विचार के साथ २१वीं सदी की सोच का प्रात: काल की मांग बढ़ती रही है ।

३ २१वीं सदी में शिक्षा व्यवस्था, विभावना परिमाण (Dimensions) के रूप में एवं छात्रो का विद्‌याकीय, राष्ट्रीय नागरिक और व्यावसायिक व्यक्तित्व विकासके सामने रहे विवाद, समस्यायें, पडकार के साथ Harmony through education का विचारविमर्ष करते है जो प्रात: कालसे स्वप्न प्रक्रीयात्मक शोचमय है ।

३.१ शालेय शिक्षाविधि (प्राथमिक से उच्च माध्यमिक) की व्यवस्थागत गतिविधि के निर्णय के लिये विवादों का निर्णय की अपेक्षा अनिवार्य लगती है ।

२१वीं सदीकी माँगकी पूर्तियोंके लिए और शालेय शिक्षाव्यवस्थाओं का पुनर्गठन के लिए शिक्षा की विभावना व्यापक रूपमें की जा शकती है ।

- Intelligence, emotional intelligence से social cultural in education of Heart, head and hand.
- Education for human development
- Education for digital literacy

शालेय शिक्षाविधि- उच्च माध्यमिक कक्षा तक उपरोक्त लक्ष्य आधारित ज्ञानात्मक विषय शिक्षण के साथ एवं प्रशिक्षण सुविधायें, अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम का पुनर्गठन अनिवार्य आवश्यकता है ।

मेरे अवलोकनमें privatization से urban और rural – शिक्षा व्यवस्थामें छात्र शिक्षा एवम् व्यक्तित्व विकास में वास्तविक स्वरांकरण निपजता रहा है, जो युवाछात्रोंमें असंतोष, उच्चतम fees, वालीवर्गका रोष, अफसोस और संचालको, शिक्षातंत्र, राज्य - राष्ट्र का शिक्षा संचालन समस्याजनक बनता जा रहा है । उनसे लेकर स्थानिक पक्षीय राजकारण का प्रति भाग भी सकारात्मक नहीं है क्योंकि राजकारण में भी परंपरागत संगठनात्म harmony को साधनरूप अपनाया जाता है जैसे कि ज्ञातिवाद, कोमवाद, साम्प्रदायिकता, प्रदेशवाद आदि जो शिक्षासे अधिक प्रभावक दिखता है । फिर भी उपरोक्त संगठित harmony का संरक्षण के लिए संगठनो ने अपना private शालेय परिपाटी अनुसार कुछ विशेष कार्यक्रम अपनाएं है और कभी राष्ट्रीय फेरफार का विरोध भी करते है। जैसे कि योगशिक्षा, वन्दे मातरम् का गान, राष्ट्रीय पर्वोत्सव आदि जिनका समाधान समयाधीन ही है ।

संवादिता- harmony- का स्वरूप:

संवादिता व्यक्ति जीवनलक्षी हो शकती है और व्यक्ति विकास की

व्यवस्था का परिणामरूप भी हो शकती है । लेकिन इसके लिये व्यक्ति का व्यक्तित्व त्रिपरिमानमें संभालना आवश्यक है । जैसेकि शिक्षणार्थी,राष्ट्रीय नागरिक और व्यवसायी याने professional तजज्ञता– जो व्यक्तिके जीवन संतोष का उपादेय है। जो इस प्रकार है -

Harmony as Educational commitment
Harmony as National commitment
Harmony as Individual commitment

शिक्षित व्यक्ति का व्यक्तित्व इस प्रकार होता है । जैसे कि-

शिक्षणार्थी:-

- विषय ज्ञान शाखा की तजज्ञता
- परिपक्वता
- व्यक्तित्व विकास
- संकल्पबध्धता
- मानवीय क्षमताएं

राष्ट्रीय नागरिक:-

- राष्ट्रीय चारित्र्य का अनुयायी
- शिष्ट, कानून व्यवस्था का पालन
- राष्ट्रीय राजकारणकी ओर भावनात्मक परिपक्वता
- राष्ट्रीय मूल्योकी नीतिमत्ता
- स्वसुधार, निर्णयात्मक परिपक्वता
- संकल्प्बध्धता
- राष्ट्रीय क्षमताएं

व्यवसायिक व्यक्तित्व:-

- व्यवसायिक ज्ञान तजज्ञता
- ज्ञान कौशल सज्जता
- आर्थिक व्यवहार में पारदर्शिता
- व्यवसायिक प्रगतिबध्ध क्षमताएं

आज के माहोल में harmony के पक्षमें व्यक्ति की शोच ये रहनी चाहिए कि- 'न तू बूरा है , न तेरी सूरत बूरी है । बुरा वो है जिसकी नियत बूरी है । नियत को संभालना जरुरी है ।' शिक्षित harmony के बारे में ये ख्याल रखें - चारित्र्य, नैतिकता, खुमारी एवं धैर्य से प्रभावित रहेना । राष्ट्रीय harmony को अपरिपक्व राजकारण से, सामूहिक नकारात्मक राष्ट्रद्रोही गतिविधियों से संभालना जरुरी है ।शिक्षा द्वारा New India के harmony की सुबह तब आयेगी ।

अस्तु ।

REFERENCES:

1. Ambra Gilies D (2007), Understanding emotional intelligence and measure your EQ.New Delhi Infinity Books.
2. Hingade, Sugandhi Jain and Jain Neera (2008) Naturing emotional intelligence in child,New Delhi,Scholar Hub.
3. Colverd sue & Hodgkin Benard (2014) Emotional Inteligenceinprimary school.
4. Health Douglasn H.(1949) Morale, culture and character assessing school of hope, Conrow publishing house.
5. Good lad John I, a place called school- prospect for the future.
6. Coles Robert (1997), Moral Intelligence of children (How to raise a moral child)
7. Tripathi Neeta S.(2006), a study of assertiveness of teacher educators of Gujarat state in relation to some socio-psycho variables.